एन० एस० वी०

नई विधि

बिना चीरा, बिना टाँका

पुरुष नसबन्दी

NSV

सिफ्सा
SIFPSA

सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ

(बिना चीरा, बिना टाँका, पुरुष नसबन्दी)

बिना चीरा, बिना टाँका पुरुष नसबन्दी सर्वप्रथम चीन में प्रो. ली द्वारा विकसित की गयी तथा वहां पर 1974 से प्रचलित है। उत्तर प्रदेश में सन् 1994 से अनवरत् रूप से सफलता पूर्वक की जा रही है। अब तक कई एन.एस.वी. शिविर, एन.एस.वी. प्रशिक्षण शिविर, मेगा कैम्प, स्वास्थ्य मेला, प्रदर्शनी शिविर इत्यादि का आयोजन विभिन्न आई.ई.सी. माध्यमों (पैम्फलेट, पॉकेट कैलेण्डर, फोल्डर, फ्लिप चार्ट, पोस्टर, पैनल, वाल हैंगिंग, बैनर, होर्डिंग, रेडियो जिंगिल, केबल टी.वी., समाचार पत्र, डॉकूमेन्ट्री फिल्म, नुक्कड़ नाटक, जादू, माइकिंग, सेन्सेटाइजेशन मीटिंग, कम्यूनिटी मीटिंग, ओ.टी. लाइव डिमान्सटेशन, वर्कशॉप, इण्टर पर्सनल कम्यूनिकेशन इत्यादि) की सहायता से सफलतापूर्वक किया गया। सफलता का आँकलन नवम्बर 2004 में सीतापुर के मेगा कैम्प से किया जा सकता है जिसमें 1500 से ऊपर एन.एस.वी. आपरेशन करके विश्व कीर्तिमान स्थापित किया गया था।

हमारा केन्द्र सिफ्सा की सहायता से निरन्तर पुरुष परिवार नियोजन में नित नये प्रयोग कर नये अध्यायों को जोड़ने की प्रबल सफलता को संजोये हुये अथक परिश्रम कर रहा है। हमें विश्वास है कि परम परमेश्वर, जनता, श्रद्धेय लाभार्थी एवं हमारा अटल विश्वास व लक्ष्य हमें निश्चित रूप से सफलता प्रदान करेगा।

प्रो. डी. दलेला

डा. एन.एस. डसीला

पाँच मिनट की प्रणाली।
जीवन भर की खुशहाली।।

(बिना चीरा-बिना टाँका पुरुष नसबन्दी की विशेषताएं)

1. यह एक आसान, दर्द रहित, भरोसेमन्द व स्थाई परिवार नियोजन का तरीका है।

2. इसमें केवल 5-10 मिनट का समय लगता है।

3. आधा घंटे बाद लाभार्थी स्वयं घर जा सकता है एवं समस्त दैनिक कार्य कर सकता है।

4. सम्पूर्ण विधि में न तो कोई चीरा लगता है न टाँका।

5. सबसे विशेष बात इससे पौरूष, उत्तेजना, कामुकता एवं शारीरिक क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि उपरोक्त के लिए जिम्मेदार हारमोन्स, वृषण में बनकर सीधे वहीं से रक्त में चले जाते हैं।

6. लाभार्थी को दवायें मुफ्त दी जायेंगी।

मर्दानगी पर प्रभाव न होगा,
पहले जैसा सब कुछ होगा।

बिना चीरा-बिना टाँका पुरुष नसबन्दी

कोई दर्द नहीं होता... क्यों?

क्योंकि बिना चीरा-बिना टाँका नसबन्दी में सर्वप्रथम खाल एवं शुक्राणु नलियों को सुन्न किया जाता है। चित्र 1 व 2

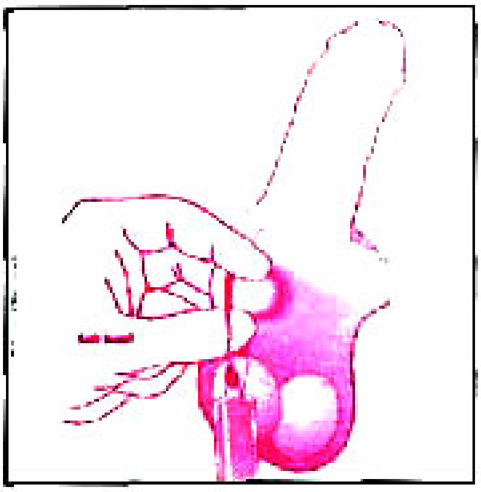

1

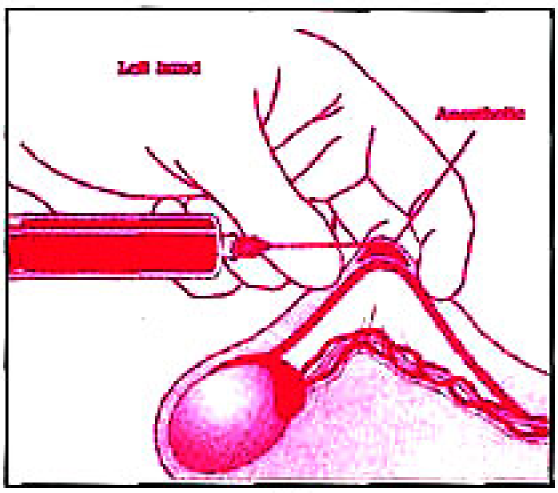

2

कोई चीरा नहीं लगता... क्यों?

क्योंकि इसमें केवल विशेष रूप से बनाये गये साधारण औजार ही प्रयोग में लाये जाते हैं। चित्र 3 व 4

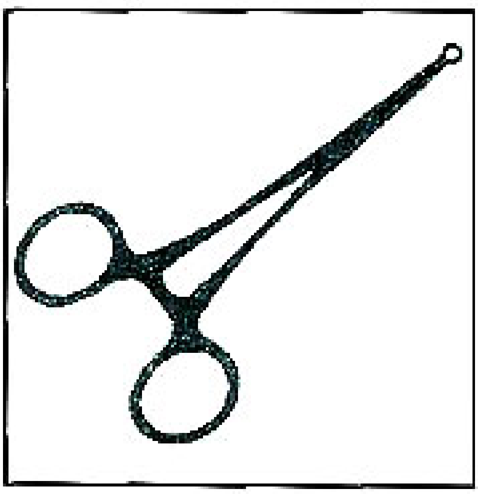

3

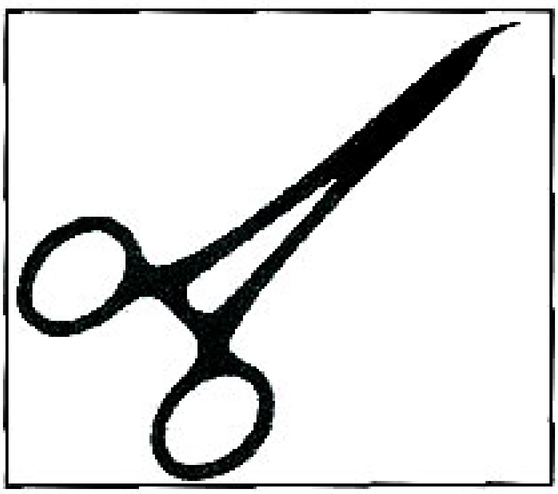

4

सावधानी का रखे जो ध्यान।
वो कर सकता है हर काम।।

कोई टाँका नहीं लगता... कैसे?

चूंकि अण्डकोष की खाल बाकी शरीर की खाल से कई गुना लचीली होती है अतः नसबन्दी के उपरान्त किया गया सुराख लगभग स्वयं बन्द हो जाता है। अतः कोई टाँका नहीं लगता। चित्र 5 से .... तक

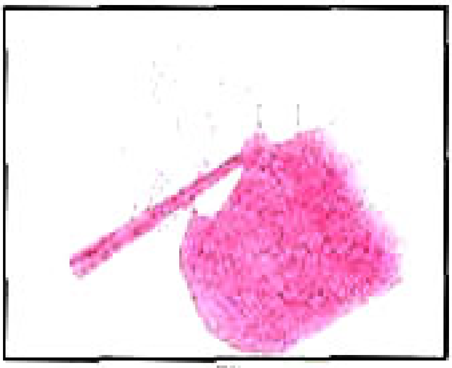

5

6

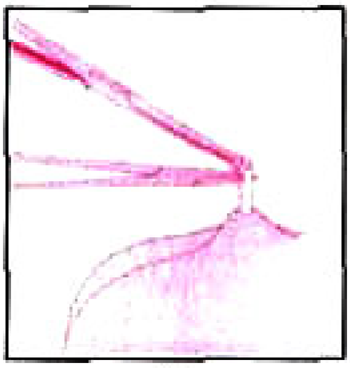

7

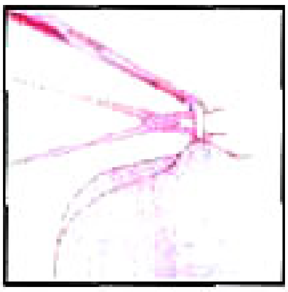

8

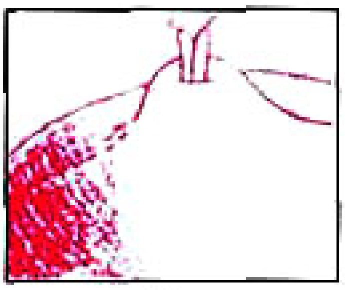

9

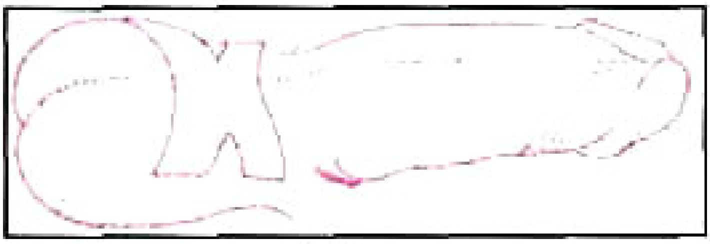

10

11

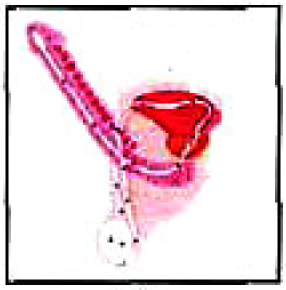

12

विशेष बातें

1. समय भी केवल 5 से 10 मिनट लगता है।
2. आधे घण्टे के उपरान्त लाभार्थी स्वयं घर जा सकता है एवं अपने समस्त दैनिक कार्य कर सकता है। अस्पताल में भर्ती होने की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

काफी आसान है... कैसे?

अब तक आप देख चुके हैं कि कोई दर्द नहीं होता, कोई चीरा नहीं लगता, कोई टाँका नहीं लगता, नसबंदी में समय भी केवल 5 से 10 मिनट लगता है। आधे घण्टे उपरान्त लाभार्थी अपने घर जा सकता है तथा समस्त हल्के दैनिक कार्य कर सकता है। कहीं पर कोई परेशानी या दिक्कत नहीं होती है। अतः बिना चीरा बिना टाँका पुरुष नसबन्दी काफी आसान है। है न...।

पुरुष नसबन्दी ही... क्यों?

1. जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा पुरुष हैं।
2. पुरुष की भागीदारी भी गर्भाधारण क्रिया में महिला के बराबर है।
3. परिवार के पालन पोषण में पुरुष भी महिला के समान भागीदार है।
4. पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) महिला नसबन्दी की तुलना में आसान है, क्योंकि सभी पुरुष जननांग शरीर की सतह पर होते हैं। अतः जोखिम भी कम रहता है।
5. काम क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। पौरूष भी पूर्ववत् बना रहता है क्योंकि पौरूष के लिए जिम्मेदार हारमोन्स अण्डकोषों से सीधे रक्त में चले जाते हैं।
6. पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) के उपरान्त लाभार्थी सभी दैनिक कार्य एवं मेहनतकश कार्य पूर्ववत कर सकता है।
7. आवश्यकता पड़ने पर नस पुनः जोड़ी जा सकती है।

पुरुष रहे क्यों पीछे भाई।
नसबन्दी की जो बारी आई।।

पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) महिला नलबन्दी से ज्यादा आसान एवं सुरक्षित है... कारण?

1. पुरुष के सभी जननांग शरीर के बाहरी सतह पर होते हैं- जबकि महिला के शरीर के अन्दर।

2. पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) में दो विशेष प्रकार के औजारों के अलावा कैंची, धागा इत्यादि साधारण चीजों की आवश्यकता पड़ती है।

3. इसमें 5 से 10 मिनट समय लगता है।

4. यह भी महिला नलबन्दी के समान ही प्रभावी है।

5. इसके उपरान्त लाभार्थी अस्पताल में भर्ती हुए बिना, आधे घण्टे के बाद घर जा सकता है एवं अपने समस्त हल्के दैनिक कार्य कर सकता है।

6. आवश्यकता पड़ने पर पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) के उपरान्त शुक्राणु नलियों को पुनः आसानी से जोड़ा जा सकता है।

बिना चीरा-बिना टाँका
परिवार कल्याण का नया तरीका।

बिना चीरा-बिना टाँका पुरुष नसबन्दी लाभार्थियों हेतु आवश्यक निर्देश

1. शल्य क्रिया के उपरान्त घर में जाकर आराम कर सकते हैं या रोज का हल्के काम कर सकते हैं। परन्तु भारी या ताकत वाला काम 48 घंटे बाद ही करें। यह घाव भरने में मदद करेगा।

2. घाव को भिगोये बगैर नहा सकते हैं (आवश्यक रूप से ध्यान रहे घाव भीगे नहीं), तीन दिन बाद घाव को साबुन व पानी से धो सकते हैं।

3. जब घाव सूख रहा हो उस समय किसी भी तरह का तनाव, घाव पर न पड़े तथा नही खुजलायें।

4. ढीला आरामदायक जाँघिया कम से कम 3 दिन तक अवश्य पहनें।

5. डाक्टरी टेप को शल्य क्रिया के उपरान्त तीन-चार दिन तक रहने दें, इसके बाद यह स्वयं निकल जायेगा।

6. शल्य क्रिया के उपरान्त कम से कम एक हफ्ता बाद जब आप अपने आपको आरामदायक स्थिति में पाते हैं, सम्भोग कर सकते हैं। ध्यान रहे शल्य क्रिया (बिना चीरा-बिना टाँका पुरुष नसबन्दी) तुरन्त काम नहीं करती। अभी भी गर्भ ठहरने की पूर्ण सम्भावना रहती है। शुक्राणु, शुक्राणुनलियों से, कम से कम 20 स्खलन (सम्भोग) के उपरान्त ही पूर्ण रूप से निकलते हैं। अतः शल्य क्रिया के उपरान्त कम से कम प्रथम 20 बार निरोध या अन्य किसी अस्थायी गर्भ निरोधक विधि अवश्य अपनायें। तदोपरान्त अपने वीर्य की जांच

बढ़ती हुई आबादी पर तुरन्त लगे पाबंदी।
चालू हो गई अपने देश में बिन चीरा नसबंदी।।

करवाकर शल्यक से परामर्श अवश्य करें। वह ही आपको आगे की सलाह देंगे।

7. शल्य क्रिया के उपरान्त शल्य क्रिया स्थल पर कुछ दर्द, थोड़ा रक्त स्राव या सूजन आ सकती है जो सामान्य है एवं स्वयं ही ठीक हो जायेगी (साथ ही दी गयी दवा का प्रयोग आवश्यक व समयानुसार किया जाय)। यदि दर्द, रक्तस्राव या सूजन काफी बढ़ जाती है तो बर्फ की सिकाई की जा सकती है। इससे काफी आराम मिलेगा। यदि आराम न मिले या निम्न में से कोई परेशानी हो तो चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें।

- यदि शल्य क्रिया के उपरान्त लगातार एक हफ्ते तक बुखार रहे।
- यदि घाव से काफी मात्रा में रक्तस्राव हो या मवाद बहे।
- काफी दर्द हो या बहुत सूजन आ जाये।

8. डाक्टरी टेप स्वयं ही निकल जायेगा। इसे निकालने का प्रयास न करें।

9. यह नसबन्दी एच.आई.वी. व अन्य यौन रोगों की रोकथाम नहीं करती बल्कि निरोध का उपयोग सर्वोत्तम उपाय है।

पुरुष रहे क्यों पीछे भाई।
नसबन्दी की जो बारी आई।।

बिना चीरा-बिना टाँका पुरुष नसबन्दी
लाभार्थी कौन बन सकता है

1. पुरुष (लाभार्थी) विवाहित हो।
2. पुरुष (लाभार्थी) जिसके एक जीवित बच्चा हो, जिसकी आयु पाँच वर्ष से अधिक हो तथा सभी प्रतिरोधी टीके लग चुके हों।
3. वह पुरुष (लाभार्थी) जिसकी पत्नी की आयु 45 वर्ष से कम हो एवं स्वयं की आयु 50 वर्ष से अधिक न हो।
4. पुरुष (लाभार्थी) एवं पत्नी में से किसी ने भी नसबन्दी या नलबन्दी न कराई हो।
5. पुरुष (लाभार्थी) जिसकी स्वयं व उसकी पत्नी की पूर्व में की गयी नसबन्दी अथवा नलबन्दी असफल हो गई हो।
6. पुरुष (लाभार्थी) जो मानसिक रूप से स्वस्थ हो एवं नसबन्दी के परिणामों को भली भांति समझ सके।
7. पुरुष (लाभार्थी) स्वयं ही नसबन्दी का इच्छुक हो तथा किसी दबाव में आकर नसबंदी न करा रहा हो।
8. पुरुष (लाभार्थी) व उसकी पत्नी यह भली भांति समझ लें कि यह एक स्थाई उपाय है।

मिनटों का काम,
जीवन भर आराम।

डरने की अब बात नहीं है, शरम वही है नीकी।
छोटा हो परिवार, तुरंत करवा लें एन.एस.वी.।।

बिना चीरा-बिना टाँका पुरुष नसबन्दी पर कुछ सामान्य प्रश्न एवं उनके उत्तर

प्रश्नः बिना चीरा–बिना टाँका पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) एवं पुरानी पद्धति से की जाने वाली नसबन्दी में क्या अंतर है एवं कौन सुरक्षित है?

उत्तर : पुरानी पद्धति से की जाने वाली नसबन्दी में वृषण कोश की खाल के दोनों ओर चाकू से चीरा लगाया जाता है जिससे रक्त प्रवाह की सम्भावनाएं ज्यादा रहती हैं एवं टाँका लगाना भी आवश्यकीय होता है। यदि टाँका लगा है तो सात दिन के उपरान्त लाभार्थी को टांके निकालने हेतु अस्पताल में आना लाजमी है साथ ही उपरोक्त विधि में संक्रमण की सम्भावनाएं भी बढ़ जाती हैं एवं समय भी ज्यादा लगता है। परन्तु बिना चीरा–बिना टाँका पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) में यह सम्भावनाएं काफी कम रहती हैं। समय भी ५ से १० मिनट तक लगता है।

प्रश्न : क्या बिना चीरा–बिना टाँका पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) से पौरुष में कोई प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : पौरुष, उत्तेजना, कामुकता एवं शारीरिक क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि इसके लिए जिम्मेदार हारमोन्स वृष्ण में बनकर सीधे रक्त में चले जाते हैं। अतः उपरोक्त पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रश्न : क्या लाभार्थी अपना काम पूर्ववत् कर सकता है?

उत्तर : चूंकि वृषण की खाल पर केवल एक छोटे सुराख द्वारा ही पूरी नसबंदी की जाती है। अतः लाभार्थी के शरीर में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए लाभार्थी अपना काम पूर्ववत् कर सकता है।

प्रश्न : बिना चीरा–बिना टाँका पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) के उपरान्त शुक्राणुओं का क्या होता है?

उत्तर : शुक्राणु पूर्ववत् अनवरत बनते रहते हैं परन्तु शरीर में ही अवशोषित हो जाते हैं।

प्रश्न : क्या नस को बिना चीरा–बिना टाँका नसबन्दी (एन.एस.वी.) के उपरान्त जोड़ा भी जा सकता है?

उत्तर : बिना चीरा–बिना टाँका नसबन्दी (एन.एस.वी.) के उपरान्त नस को आसानी से जोड़ा जा सकता है। यह आपरेशन हमारे यहां पर निःशुल्क किया जाता है।

एन.एस.वी.

की सुविधा किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय लखनऊ में प्रत्येक कार्यदिवस में उपलब्ध है।

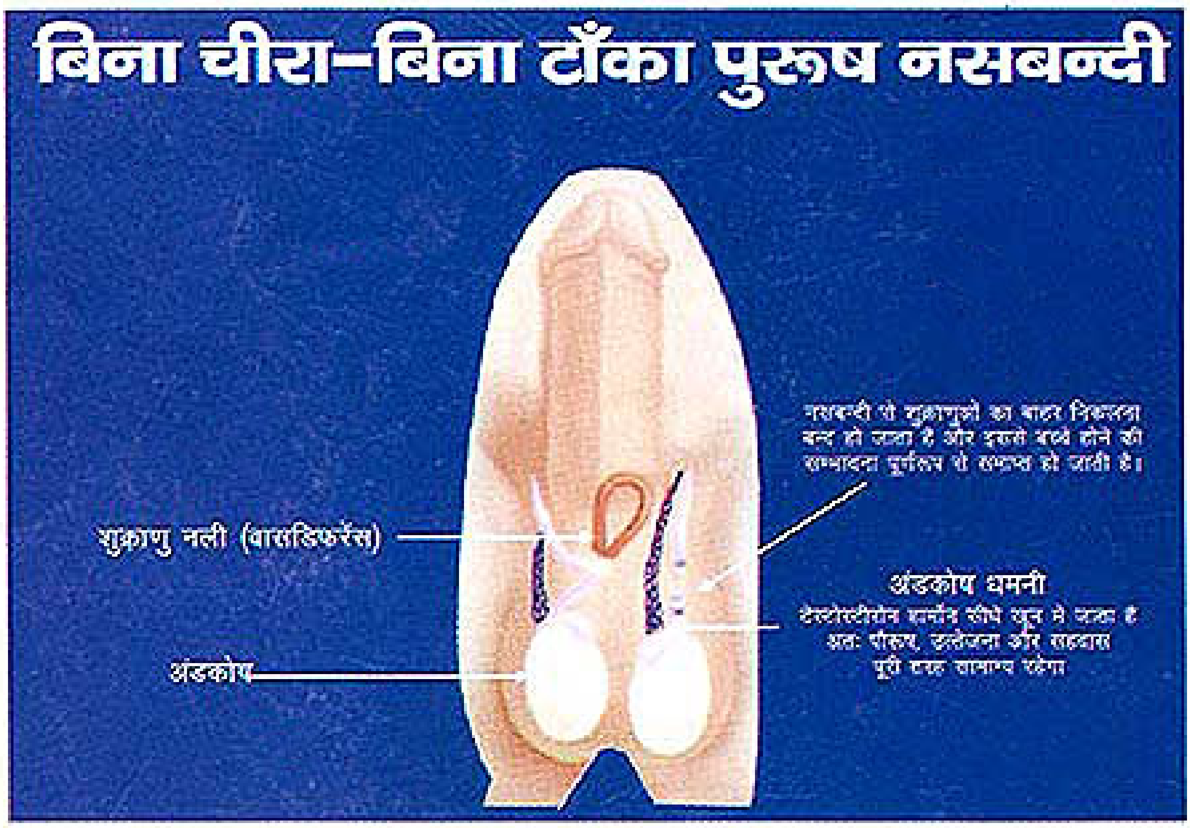

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

डा. डी. दलेला

प्रोजेक्ट डायरेक्टर

सेन्टर ऑफ एक्सिलेंस फॉर एन.एस.वी.

यूरोलॉजी विभाग, के.जी.एम.यू., लखनऊ।

डा. एन. एस. डसीला

मास्टर ट्रेनर

एन.एस.वी. .

सेन्टर ऑफ एक्सिलेंस फॉर एन.एस.वी.

यूरोलॉजी विभाग, के.जी.एम.यू., लखनऊ।

सिफ्सा के सौजन्य से जनहित में प्रसारित